जैन दर्शन के स्यादवाद की समीक्षा कीजिए।

= स्यादवाद ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त है यह जैन दर्शन के अन्तर्गत किसी वस्तु के गुण को समझने, समझाने और अभिव्यक्त करने का सापेक्षिक सिद्धान्त है। सापेक्षता का अर्थ 'किसी की अपेक्षा से' है। यहाँ पर 'स्यात' पद का सामान्य अर्थ 'सम्भवत:' या 'शायद' है जिसमें संशय झलकता है। किन्तु जैन दर्शन में 'स्यात' पद का अर्थ संशय नहीं है, यह जान लेना आवश्यक है कि जैन दर्शन में 'स्यात' पद ज्ञान की सापेक्षता का सूचक है।

जैन मतानुसार ज्ञान और तद्विषयक वाक्य तीन प्रकार के होते हैं —

(1.) दुर्नीति (Bad judgement)
(2.) नय (Judgement)
(3.) प्रमाण/वैधज्ञान (Valid judgement)

(1.) दुर्नीति (Bad judgement) :- किसी वस्तु के एक गुण को दिखाना तथा अन्य गुणों का निषेध करना दुर्नीति है। जैसे हम कहें कि 'यह सत ही है' क्योंकि यहाँ आंशिक ज्ञान को पूर्ण मान लिया गया है। 'ही' यह दर्शाता है कि वस्तु केवल सत है और कुछ नहीं।

(2.) नय (Judgement) :- किसी वस्तु के एक गुण को दिखाना/बताना और अन्य गुणों को मना/निषेध भी न करना 'नय' है। जैसे 'यह सत है'। यह बताता है कि वस्तु के सत के साथ और कुछ भी

Scanned By CamNScan

गुण है। परन्तु इस समय केवल 'सत' ही दिखाया गया है।

(3) प्रमाण / वैद्यज्ञान (Valid Judgement) :- जब किसी वाक्य से पहले 'स्यात' शब्द जोड़ा जाय तो वह नया वाक्य प्रमाण कहलाता है। क्योंकि इसमें आंशिकता और सापेक्षता दोनों प्रकाशित होता है। अर्थात वस्तु के अनन्त गुणधर्मों को अनन्त अपेक्षाओं से देखा जाता है। अतः हम जब किसी वाक्य से पहले स्यात नहीं लगाते तो वह ज्ञान की निरपेक्षता तथा एकान्तिकता का विधान करता है।

स्यादवाद को सप्तभङ्गी नय कहते हैं। साधरणतया न्याय वाक्य दो प्रकार के माने जाते हैं- अन्वयी (विधानात्मक) और व्यतिरेकी (निषेधात्मक)। किन्तु जैन धर्म के अनुसार नय के सात प्रकार के होते हैं जिसे जैनी सप्तभङ्गी नय कहते हैं। महावीर स्वामी की जीवनी भगवति सूत में केवल तीन मुल भंग बताये गये हैं - ~~स्यत~~ स्यात अस्ति, स्यात नास्ति तथा स्यात अवक्तयम। किन्तु 'कुन्दकुन्दाचार्य' ने अपने पुस्तक 'प्रवचन सार' और 'पंचायतीकास्त सार' में सात भंगों की चर्चा की है। ये सात भंग इस प्रकार हैं :-

(1.) स्यात अस्ति (स्यात है) :- इससे तात्पर्य है कि कोई वस्तु किसी निश्चित द्रव्य, रूप, देश और काल में यह उपस्थित है या वस्तु का अस्तित्व है।

(2.) स्यात नास्ति (स्यात नहीं है) :- इसका अर्थ है कि कोई वस्तु किसी निश्चित, द्रव्य, रूप, देश और काल में नहीं हैं या उसका अस्तित्व नहीं है

Scanned By CamNScan

3) स्यात अस्ति च नास्ति च :- इस नय का अर्थ है कि एक ही समय में भिन्न-भिन्न विचारों से वस्तु है भी और नहीं भी।

4.) स्यात अवक्तव्यम् -(स्यात कुछ कहा नहीं जा सकता) :-
⇒ सापेक्षतया ~~वस्तु है और~~ (अवक्तव्य) अवर्णनीय है। अर्थात अनन्तगुण होने के कारण किसी वस्तु के सभी गुणों को भाषा की सीमा के कारण वस्तु की असीमीत धर्मों को व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

5.) स्यात अस्ति च अवक्तव्यम :- सापेक्षतया वस्तु है और अवर्णनीय भी है। यह प्रथम + चौथे नय को मिलाने से बनता है।

6.] स्यात नास्ति च अवक्तव्यम् :- सापेक्षतयावस्तु नहीं है और कहा भी नहीं जा सकता। यह द्वितीय + चौथे नय को मिलाने से बनता है।

7.] स्यात, आस्ति च, नास्ति च अवक्तव्यम् च :- सापेक्षतया वस्तु है और नहीं है और कहा भी नहीं जा सकता है। यह नय प्रथम, द्वितीय तथा चतुर्थ को मिलाने से बनता है।

अत: जैनी कहते हैं कि स्याद्वाद न ही संशयवाद है न ही अज्ञेयवाद बल्कि यह ~~सापेक्षता~~ ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त है।

Scanned By CamNScan